Date - 13-05-2020

Dr. Sanchlata

Asst. Professor (Guest faculty)

Dept. of Philosophy

Women's college, Samastipur

Email Id. - Snehababli1987@gmail.com

Cont. no - 8409587640

Class - B.A. - I (Hons.)

Topic - Relationship between Brahman and Jiva.

Scanned with CamScanner

ब्रह्म - जीव सम्बन्ध

ब्रह्म एवं जीव के सम्बन्ध की विवेचना करने के लिए शंकर के अनुयायियों द्वारा तीन सिद्धान्त प्रतिपादित किए गए हैं—

अनुयायी		सिद्धान्त
(1) विवरण - प्रस्थानवादी	–	प्रतिबिम्बवाद
(2) भामती - प्रस्थानवादी	–	अवच्छेदवाद
(3) वार्तिक - प्रस्थानवादी	–	आभासवाद

Scanned with CamScanner

(1) प्रतिबिम्बवाद : इस सिद्धान्त के अनुसार ब्रह्म का अविद्या में प्रतिबिम्ब जीव है। अतः वास्तव में यह ब्रह्म से अभिन्न है। जैसे एक ही चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब भिन्न-भिन्न जलाशयों की स्थिति के अनुरूप भिन्न-भिन्न दिखाई देता है। उसी प्रकार अविद्या की प्रकृति के अनुरूप ही ब्रह्म का प्रतिबिम्बस्वरूप जीव भी भिन्न-भिन्न प्रकार का दिखाई देता है। जैसे जल के हटा लेने पर केवल चन्द्रमा शेष बचता है उसी प्रकार अविद्या के निराकरण के पश्चात केवल ब्रह्म की ही सत्ता शेष रह जाती है।

(2) अवच्छेदवाद : जिस प्रकार एक ही सर्वव्यापी आकाश उपाधि विशेष से, घटाकाश, मठाकाश आदि रूपों में दिखाई देता है उसी प्रकार एक ही सर्वव्यापी ब्रह्म अविद्या के कारण उपाधि भेद से नाना प्रकार के जीवों के रूप में भासित होता है। जिस प्रकार घट, मठ आदि द्वारा निर्मित परिधियों के हट जाने पर सीमाबद्ध आकाश सर्वव्यापी आकाश से एकाकार हो जाता है उसी प्रकार अविद्या के निराकरण के पश्चात् सीमित चैतन्य रूप जीव ब्रह्म चैतन्य से एकाकार हो जाता है।

(3) आभासवाद : इसके अनुसार जीव ब्रह्म का आभासमात्र है। यह आभास ब्रह्म का विवर्त है। यहाँ अविद्या के कारण होता है।

Scanned with CamScanner